परमाणु ऊर्जा शिक्षण संस्था , मुंबई

कक्षा-छठवीं

विषय-संस्कृत **पुस्तक-रुचिरा**

शीर्षक-धातुरूपाणि-लृट् लकार (पठ्, गम्,) **मॉड्यूल-1/1**

श्रीमती प्रतिभा रोकड़े (परमाणु ऊर्जा केंद्रीय विद्यालय–3 तारापुर)

सामान्य परिचय

धातु: जिन शब्दों के द्वारा किसी कार्य का करना या होना पाया जाता है, उसे क्रिया कहते हैं। संस्कृत में क्रिया के मूल शब्दों को "धातु" कहते हैं। धातु शब्द का अर्थ है- स्थापित करना,धारण करना, रखना आदि। पठति, गच्छति, नयति आदि क्रियाओं की क्रमशः पठ्, गम्, नी् धातुएँ हैं।

लकार: वैयाकरणों ने वाक्य में प्रयोग होने वाले क्रिया के काल या वृत्ति को "लकार" कहा है। संस्कृत में लकारों की संख्या 10 है। जिनके नाम इस प्रकार हैं- लट् , लिट् , लुट् , लृट् , लेट् , लोट् , लङ् , लिङ् , लुङ् , लृङ्। वास्तव में ये दस प्रत्यय हैं जो धातुओं में जोड़े जाते हैं। इन दसों प्रत्ययों के प्रारम्भ में 'ल' है इसलिए इन्हें 'लकार' कहते हैं (ठीक वैसे ही जैसे ॐकार, अकार, इकार, उकार इत्यादि)।

लृट् लकार: सामान्य भविष्य काल के लिए लृट् लकार का प्रयोग किया जाता है। जहाँ भविष्य काल की कोई विशेषता न कही जाए वहाँ लृट् लकार ही होता है। कल, परसों आदि विशेषण न लगे हों। भले ही घटना दो पल बाद की हो अथवा वर्ष भर बाद की, बिना किसी विशेषण वाले भविष्यत् में लृट् का प्रयोग करना है। 'आज होगा' – इस प्रकार के वाक्यों में भी लृट् होगा।

पुरुष: संस्कृत भाषा में तीन पुरुष होते हैं- प्रथम पुरुष , मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष।

वचन: संस्कृत में वचनों की संख्या भी तीन होती है- एकवचन, द्विवचन और बहुवचन। संख्या में एक होने पर एकवचन का, दो होने पर द्विवचन का तथा दो से अधिक होने पर बहुवचन का प्रयोग किया जाता है। (हिंदी में केवल दो वचन होते हैं – 1.एकवचन 2.बहुवचन)

****